MAINS MATRIX

TABLE OF CONTENT

1. "सीमित गुंजाइश: रुपये को स्थिर रखने के लिए भारत को तेल आयात पर निर्भरता कम करनी होगी"
2. कैसे समझें जटिल वैश्विक परिदृश्य को
3. जापान–चीन टकराव: ताइवान को लेकर व्यापार और रक्षा तनाव बढ़े
4. COP30: "आग से लड़ाई — क्रियान्वयन ही नई कथा"

"सीमित गुंजाइश: रुपये को स्थिर रखने के लिए भारत को तेल आयात पर निर्भरता कम करनी होगी"

1. वर्तमान स्थिति और समस्या

मुद्रा अवमूल्यन: भारतीय रुपया लगभग 7% गिरा है — लगभग ₹83.4 प्रति डॉलर से फिसलकर लगभग ₹89.2 प्रति डॉलर तक।

मुख्य कारण:

- चालू खाते के घाटे (CAD) में वृद्धि
- अनिश्चित समय में बचाव के रूप में सोने (bullion) के अधिक आयात
- उच्च अमेरिकी टैरिफ के कारण भारतीय निर्यात प्रतिस्पर्धा में कमजोर
- **RBI का दायरा:** "फ़्लोटिंग-बट-मैनेज्ड" विनिमय दर प्रणाली में RBI केवल अस्थिरता को कम कर सकता है, विनिमय दर को तय नहीं कर सकता।

---

2. ऐतिहासिक संदर्भ और RBI की कार्रवाइयाँ

पिछला अनुभव: 2018 में भी डॉलर की मजबूती, अमेरिकी ब्याज दरों में बढ़ोतरी और व्यापार तनाव के कारण रुपये में 10–12% की गिरावट हुई थी।

RBI के उपकरण: RBI फॉरेक्स स्वैप का उपयोग करता है—

- बैंकिंग प्रणाली में तरलता देने के लिए
- विदेशी मुद्रा भंडार मजबूत करने के लिए
- रुपये में अव्यवस्थित गिरावट को रोकने के लिए

हालिया हस्तक्षेप: RBI ने लगभग **$50 बिलियन** की नेट फॉरेक्स बिक्री की है, परन्तु भारी वैश्विक दबाव के कारण रुपये में गिरावट जारी है।

---

3. सावधान आशावाद के कारण

- **मजबूत विदेशी मुद्रा भंडार:** लगभग **$693 बिलियन**

- **कम घरेलू मुद्रास्फीति:** अक्टूबर 2025 में CPI केवल **0.25%**, जो RBI के 2–6% लक्ष्य से बहुत कम है
- **नीतिगत गुंजाइश:** कम मुद्रास्फीति से RBI को हल्की मुद्रा अवमूल्यन सहने की गुंजाइश मिलती है, बिना ब्याज दरें आक्रामक रूप से बढ़ाए।

---

4. जोखिम और मूलभूत कमजोरी

- **तेल पर अत्यधिक निर्भरता:** कच्चा तेल भारत के कुल आयात का **20% से अधिक** है।
- **मुद्रास्फीति का जोखिम:**
    - कमजोर रुपया
    - रूस की अपेक्षाकृत सस्ती कच्चे तेल की आपूर्ति घटने से महंगे अमेरिकी तेल की ओर झुकाव

    दोनों मिलकर मुद्रास्फीति बढ़ा सकते हैं।

---

5. सुझाए गए समाधान

केवल मौद्रिक नीति से स्थिरता संभव नहीं है।

मुख्य समाधान: सरकार को तेल आयात पर भारी निर्भरता को कम करना होगा — यही मूलभूत कमजोरी है।

सिफारिशें:

- परिवहन क्षेत्र के **तेजी से विद्युतीकरण** को *रणनीतिक आवश्यकता* के रूप में अपनाया जाए और इसे तेज़ी से लागू किया जाए।
- अनेक द्विपक्षीय व्यापार समझौतों पर ध्यान देने के बजाय एक **विचारपूर्ण और स्थायी व्यापार नीति** तैयार की जाए।

वर्तमान नीति की आलोचना:

जापान, UAE और ASEAN के साथ हुए मौजूदा व्यापार समझौतों ने व्यापार संतुलन को भारत के खिलाफ झुका दिया है और व्यापार मार्गों में अपेक्षित विविधीकरण नहीं ला पाए हैं।

HOW TO USE IT

भारत की आर्थिक स्थिरता तेल आयात पर अत्यधिक निर्भरता के कारण बाहरी झटकों के प्रति अत्यंत संवेदनशील है। यह निर्भरता चालू खाते के घाटे (CAD) को बढ़ाती है और रुपये पर अवमूल्यन का दबाव डालती है। RBI अल्पकाल में अस्थिरता को नियंत्रित कर सकता है, लेकिन दीर्घकालिक समाधान ऊर्जा सुरक्षा और रणनीतिक व्यापार नीति पर आधारित संरचनात्मक सुधारों से ही संभव है।

प्रमुख प्रासंगिकता: GS Paper III (Indian Economy)

1. भारतीय अर्थव्यवस्था और योजना, संसाधनों का संmobilization, विकास और रोजगार से संबंधित मुद्दे

कैसे उपयोग करें: यह मुख्य आर्थिक आयाम है। रुपये की गिरावट व्यापक प्रभावों वाला एक मैक्रोइकॉनॉमिक चुनौती है।

मुख्य बिंदु:

- **CAD का प्रभाव:**
  तेल आयात पर अत्यधिक निर्भरता के कारण चालू खाते का घाटा बढ़ता है। इससे विदेशी मुद्रा की मांग बढ़ती है और रुपये पर अवमूल्यन का दबाव पड़ता है।
- **मुद्रास्फीति का खतरा:**
  कमजोर रुपया डॉलर-मूल्यांकित कच्चे तेल को और महँगा बना देता है। यह *आयातित मुद्रास्फीति (imported inflation)* का क्लासिक उदाहरण है, जो वर्तमान में कम घरेलू मुद्रास्फीति के लाभ को खत्म कर सकता है।
- **निर्यात प्रतिस्पर्धा:**
  सामान्यतः कमजोर रुपया निर्यात को प्रतिस्पर्धी बनाता है, लेकिन लेख बताता है कि अमेरिकी टैरिफ की ऊँचाई के कारण भारतीय निर्यातक अभी भी संघर्ष कर रहे हैं। यह दिखाता है कि केवल सस्ता रुपया निर्यात बढ़ाने की गारंटी नहीं है।

---

2. सरकारी बजटिंग

कैसे उपयोग करें: तेल मूल्यों को सरकार के राजकोषीय स्वास्थ्य से जोड़ें।

मुख्य बिंदु:

- अधिक तेल आयात बिल सरकार के **राजकोषीय घाटे** को बढ़ा सकता है, विशेषकर जब सरकार LPG, उर्वरक आदि पर सब्सिडी देकर कीमतों को पूरी तरह उपभोक्ताओं पर नहीं डालती।

---

3. उदारीकरण के अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

कैसे उपयोग करें: भारत की व्यापार नीति की आलोचना का विश्लेषण करें।

मुख्य बिंदु:

- जापान, यूएई और ASEAN के साथ हुए व्यापार समझौतों के "व्यापार संतुलन को भारत के खिलाफ झुकाने" का उल्लेख भारत की उदारीकरण-उपरांत व्यापार रणनीति की गंभीर समीक्षा है।
- लेख एक ऐसी **रणनीतिक और सुविचारित व्यापार नीति** की वकालत करता है जो आयात-निर्यात के संतुलन को प्राथमिकता दे।

---

4. अवसंरचना: ऊर्जा

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

कैसे उपयोग करें: दीर्घकालिक समाधान यहीं है।

मुख्य बिंदु:

- "तेज़ी से परिवहन विद्युतीकरण को रणनीतिक आवश्यकता" के रूप में अपनाने की सिफारिश ऊर्जा संक्रमण (energy transition) की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।
- घरेलू रूप से उत्पादित बिजली (सौर, पवन, परमाणु) से चलने वाले परिवहन की ओर बढ़कर तेल आयात पर निर्भरता कम की जा सकती है — यह ऊर्जा सुरक्षा और अवसंरचना विकास दोनों का लक्ष्य है।

GS Paper II (Governance) से लिंक

- **सरकारी नीतियाँ और हस्तक्षेप:** EV अपनाने की राष्ट्रीय रणनीति और व्यापार नीति का पुनर्गठन सुशासन का हिस्सा है। इसके लिए **अंतर-मंत्रालयी समन्वय** और दीर्घकालिक दृष्टि आवश्यक है।

GS Paper I (Geography) से लिंक

- **प्राकृतिक संसाधनों का वितरण:** भारत में पर्याप्त घरेलू तेल भंडार न होना एक मूलभूत भौगोलिक बाधा है, जो उसकी आर्थिक तथा विदेश नीति दोनों को आकार देती है।

कैसे समझें जटिल वैश्विक परिदृश्य को

मुख्य संदर्भ

- यह लेख **7वें U.S.–China–Hong Kong Forum (7–8 नवंबर 2025)** की चर्चाओं पर आधारित है।
- थीम: U.S.–China तनावों को कैसे संभाला जाए और इस बदलते वैश्विक परिदृश्य में **हांगकांग की मध्यस्थ, मिश्रित वैश्विक भूमिका** क्या हो सकती है।

मुख्य तर्क

हांगकांग की **सांस्कृतिक संकरता (hybridity)**, अंतरराष्ट्रीय जुड़ाव और अपेक्षाकृत तटस्थता इसे U.S. और चीन के बीच बढ़ती भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता में **एक संभावित सेतु (bridge)** बनाती है।

मुख्य अंतर्दृष्टियाँ और अवलोकन

A. जटिल महाशक्ति प्रतिद्वंद्विताएँ

U.S.–China संबंधों की विशेषताएँ:

- रणनीतिक अविश्वास

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- परस्पर विरोधी विश्व दृष्टिकोण
- आर्थिक अलगाव (decoupling)
- प्रभाव-आधारित राजनीति

पारंपरिक कूटनीतिक तरीके आज की जटिलताओं के लिए पर्याप्त नहीं रह गए हैं।

B. नए ढांचे (Frameworks) की आवश्यकता

प्रतिभागियों ने ज़ोर दिया:

- साहस, ईमानदारी और व्यवहारिकता
- नए प्रकार के संवाद मॉडल
- शून्य-योग (zero-sum) और द्वैतवादी सोच से बाहर निकलने की आवश्यकता

हांगकांग की रणनीतिक भूमिका

A. मध्य-भूमि (Middle Ground) का लाभ

हांगकांग एक:

- तटस्थ, वैश्विक शहर
- संवाद के लिए मंच
- विभिन्न पक्षों का अद्वितीय मिलन-बिंदु
- वैचारिक और राजनीतिक विभाजनों को पाटने की क्षमता

रखता है।

B. सांस्कृतिक संकरता (Cultural Hybridity)

- चीनी परंपराओं और पश्चिमी खुलापन का मिश्रण
- वैश्विक व्यापार नेटवर्क, अंतरराष्ट्रीय प्रतिभा और मजबूत वित्तीय प्रणाली का केंद्र

C. भविष्य की संभावना

हांगकांग का भविष्य निर्भर करेगा:

- अपनी बहुलवादी और विश्व-नागरिक पहचान बनाए रखने पर
- वैश्विक बाजारों से जुड़ाव बनाए रखने पर
- उस **हाइब्रिड पहचान** की रक्षा पर जो बड़े शक्तियों के विफल होने पर संवाद का रास्ता खोल सकती है

फोरम में उभरते प्रमुख थीम

A. टेक्नोलॉजी और AI

- AI वैश्विक जरूरतों और राष्ट्रीय नियंत्रणों के बीच की खाई को उजागर करता है।
- तकनीक के हथियारकरण का खतरा।
- वैश्विक शासन (global governance) मानकों की जरूरत।

B. विखंडित विश्व और सामरिक स्वायत्तता (Strategic Autonomy)

- अनेक देश (विशेषकर ग्लोबल साउथ) किसी एक शक्ति शिविर में शामिल हुए बिना स्वायत्तता की तलाश में हैं।
- नए "मिडिल पावर्स" उभर रहे हैं।

C. युवा और नया सामाजिक अनुबंध

- युवा पीढ़ी अधिक वैश्विक रूप से जुड़ी हुई है।
- परंपरागत राजनीतिक ढांचे उनकी वास्तविकताओं से मेल नहीं खाते।

D. सुरक्षा और बहुपक्षवाद

- समावेशी नियम-निर्माण की आवश्यकता।
- केवल U.S. या चीन पर निर्भर रहने की बजाय क्षेत्रीय ढांचों का पुनर्निर्माण जरूरी।

पहचानी गई चुनौतियाँ

- चीन की बढ़ती आक्रामकता और सुरक्षा चिंताएँ
- U.S. की अविश्वासपूर्ण एवं वैचारिक दृष्टि
- अस्थिर वैश्विक अर्थव्यवस्था और सप्लाई चेन जोखिम
- अंतरराष्ट्रीय सहयोग में गिरावट
- राष्ट्रवाद और संरक्षणवाद का उभार

सकारात्मक निष्कर्ष / अवसर

हांगकांग एक **"थर्ड स्पेस"** के रूप में:

- U.S.–China राजनीतिक गतिरोध तोड़ सकता है
- लोगों के बीच संवाद को बढ़ावा दे सकता है
- अकादमिक व वैज्ञानिक सहयोग को मजबूत कर सकता है
- नए वैश्विक सहयोग मानदंडों के विकास में मदद कर सकता है

फोरम ने यह भी रेखांकित किया:

- स्थिरता की इच्छा
- आर्थिक व्यवहारिकता
- सहयोगात्मक वैश्विक शासन की आवश्यकता

"THE GIST" (सार)

- U.S.–China तनाव वैश्विक भू-राजनीति को आकार दे रहे हैं; हांगकांग संवाद के लिए एक दुर्लभ **मध्य-स्थल** है।
- फोरम ने स्वीकार किया कि तनाव बना रहेगा, लेकिन संरचित संवाद जारी रहना चाहिए।

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- हांगकांग की ताकत उसकी **सांस्कृतिक संकरता और वैश्विक कनेक्टिविटी** में है।
- भविष्य के अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए हांगकांग की भूमिका एक **“मध्यस्थ स्थान”** के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

HOW TO USE IT

तीव्र U.S.–China प्रतिद्वंद्विता के दौर में पारंपरिक कूटनीति कम प्रभावी होती जा रही है। ऐसे में हांगकांग जैसे “हाइब्रिड मध्य-क्षेत्र” नई कूटनीतिक संभावनाएँ प्रदान करते हैं। भारत, जो रणनीतिक स्वायत्तता का पालन करता है, के लिए इन मध्य-स्थानों को समझना महत्वपूर्ण है ताकि उसे किसी एक पक्ष को चुनने के लिए मजबूर न किया जाए और वह विभाजित वैश्विक व्यवस्था में अपने हितों की रक्षा कर सके।

मुख्य प्रासंगिकता: GS Paper II (International Relations)

---

1. द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक समूह तथा समझौते जो भारत से जुड़े हैं या भारत के हितों को प्रभावित करते हैं

कैसे उपयोग करें:

U.S.–China प्रतिद्वंद्विता एक परिभाषित करने वाला द्विपक्षीय संबंध है जो लगभग सभी वैश्विक व्यवस्थाओं और भारत के हितों को प्रभावित करता है।

मुख्य बिंदु:

- **मुख्य भू-राजनीतिक संघर्ष:**
  लेख U.S.–China तनावों के प्रमुख कारणों को “रणनीतिक अविश्वास,” “आर्थिक अलगाव (decoupling),” और “परस्पर विरोधी विश्वदृष्टियाँ” बताता है।
  भारत को अपनी विदेश नीति — QUAD, BRICS, SCO जैसे मंचों में सहभागिता सहित — इसी पृष्ठभूमि में बनानी होगी।
- **भारत की रणनीतिक स्वायत्तता:**
  फोरम में कहा गया कि ग्लोबल साउथ के देश “किसी एक खेमे में शामिल होने के लिए मजबूर हुए बिना स्वायत्तता चाहते हैं।”
  यह भारत की विदेश नीति की मूल भावना को प्रतिबिंबित करता है।
  भारत इस वातावरण का लाभ उठाकर **मिडिल पावर गठबंधनों** को मजबूत कर सकता है।

---

2. विकसित और विकासशील देशों की नीतियों/राजनीति का भारत के हितों पर प्रभाव

कैसे उपयोग करें:

समझें कि U.S. और चीन की गतिविधियाँ

भारत के लिए चुनौतियाँ भी लाती हैं और अवसर भी।

मुख्य बिंदु:

- **प्रौद्योगिकी और AI शासन:**
  "तकनीक का हथियारकरण" और "AI के वैश्विक शासन मानकों का अभाव" भारत के लिए महत्वपूर्ण हैं।
  एक उभरती टेक शक्ति के रूप में भारत को सुनिश्चित करना होगा कि U.S. और चीन उसके लिए नियम तय न करें।
  हांगकांग जैसे प्लेटफॉर्म AI व तकनीकी मानकों पर Track-II संवाद के लिए स्थान बन सकते हैं।

- **आर्थिक सुरक्षा:**
  "अस्थिर वैश्विक अर्थव्यवस्था" और **सप्लाई चेन जोखिम** सीधे भारत की वृद्धि को प्रभावित करते हैं।
  चीन से सप्लाई चेन विविधीकरण — जो अमेरिका का प्रमुख लक्ष्य है — भारत के विनिर्माण (PLI योजनाएँ) के लिए अवसर प्रदान करता है।

---

3. अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ, एजेंसियाँ और मंच — उनकी संरचना और भूमिका

कैसे उपयोग करें:

पारंपरिक बहुपक्षवाद के कमजोर होने और वैकल्पिक संरचनाओं के उभरने का अध्ययन करें।

मुख्य बिंदु:

- **पारंपरिक बहुपक्षवाद का क्षय:**
  "अंतरराष्ट्रीय सहयोग में गिरावट" UN जैसे सार्वभौमिक संस्थानों की कमज़ोरी को दर्शाती है।
  इससे एक **शासनात्मक खालीपन (governance vacuum)** बनता है।

- **अनौपचारिक "थर्ड स्पेसेज़" की भूमिका:**
  लेख बताता है कि U.S.–China–Hong Kong Forum जैसे गैर-सरकारी, अनौपचारिक मंच औपचारिक कूटनीति के पूरक बन सकते हैं।
  भारत भी अपनी **सॉफ्ट पावर केंद्रों** का उपयोग कर ऐसे संवाद प्रारूप विकसित कर सकता है।

GS Paper IV (Ethics) से लिंक

- **मानव इंटरफेस:**
  हांगकांग की "सांस्कृतिक संकरता" संवाद को बढ़ावा देती है — यह अंतरराष्ट्रीय संबंधों में *कॉस्मोपॉलिटनिज़्म और सहिष्णुता* जैसे नैतिक मूल्यों का उदाहरण है।

- **भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence):**

संवाद में "साहस, स्पष्टवादिता और व्यवहारिकता" की अपेक्षा — राजनयिकों की ईमानदार, संवेदनशील और संतुलित सोच की आवश्यकता को दर्शाती है।

GS Paper III (Security) से लिंक

- **आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियाँ:**
  वैश्विक स्तर पर बढ़ रहा राष्ट्रवाद और संरक्षणवाद भारत जैसे विविध देश में सामाजिक एकजुटता को प्रभावित कर सकता है।
- **मीडिया और सोशल नेटवर्किंग साइटों की भूमिका:**
  लेख में कहा गया कि युवा वैश्विक स्तर पर अधिक जुड़े हुए हैं।
  U.S.–China प्रतिद्वंद्विता से उत्पन्न *सूचना युद्ध* भारतीय जनमत को प्रभावित कर सकता है — यह एक आंतरिक सुरक्षा चिंता है।

जापान–चीन टकराव: ताइवान को लेकर व्यापार और रक्षा तनाव बढ़े

---

1. परिचय

जापान–चीन संबंध, जो लंबे समय से आर्थिक परस्पर निर्भरता और रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता से चिह्नित रहे हैं, अब तनाव के नए चरण में प्रवेश कर चुके हैं। यह विवाद तब तेज हुआ जब जापान की प्रधानमंत्री पद की दावेदार साने ताकाइची ने कहा कि ताइवान पर चीन का हमला *"जापान के लिए अस्तित्व को खतरे में डालने वाली स्थिति"* होगी — जिससे जापान के संविधान के तहत सैन्य कार्रवाई को उचित ठहराया जा सकता है। यह घटना रक्षा चिंताओं और आर्थिक जोखिमों के बीच बढ़ते तनाव को और गहरा करती है।

---

2. राजनीतिक कारण और सामरिक परिप्रेक्ष्य

2.1 ताकाइची का बयान

- ताकाइची ने कहा कि ताइवान का पतन जापान की सुरक्षा को गंभीर रूप से प्रभावित करेगा।
- 2015 की सुरक्षा कानून व्यवस्था के अनुसार ऐसी स्थिति में जापान अमेरिका की सहायता करते हुए *सामूहिक आत्मरक्षा* कर सकता है।
- चीन ने इस बयान को *आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप* बताते हुए खारिज कर दिया।

2.2 जापान का बदलता रणनीतिक रुख

- जापान की दक्षिणपंथी और रूढ़िवादी ताकतें अब चीन को अस्तित्वगत खतरे के रूप में देख रही हैं।

- रणनीतिक बहसें अब *निरोध, मित्र देशों के साथ सहयोग*, और *जापान की सुरक्षा में ताइवान की केंद्रीय भूमिका* पर केंद्रित हैं।

---

3. कानूनी और संवैधानिक पृष्ठभूमि

- जापान के युद्धोत्तर संविधान का अनुच्छेद 9 आक्रामक सैन्य क्षमताओं को सीमित करता है।
- 2015 की व्याख्या में "अस्तित्व-खतरे की स्थिति" होने पर *सीमित सामूहिक आत्मरक्षा* की अनुमति दी गई।
- ताकाइची का रुख इस प्रावधान को ताइवान संकट तक विस्तारित करता है — जो एक संवेदनशील कूटनीतिक बदलाव है।

---

4. आर्थिक परस्पर निर्भरता और कमजोरियाँ

4.1 व्यापार निर्भरता

- 2007 से चीन जापान का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार रहा है।
- चीन से आयात: **20.5%**
- चीन को निर्यात: **23%** (2018–2024 औसत)

4.2 आपूर्ति श्रृंखला जोखिम

जापान का निर्माण क्षेत्र चीन से गहराई से जुड़ा है, विशेषकर:

- दुर्लभ धातुएँ (≈60% आयात)
- इलेक्ट्रॉनिक्स और मुख्य घटक
- रसायन और मशीनरी के इनपुट

4.3 ताइवान जलडमरूमध्य का महत्व

- हर साल लगभग **440 अरब डॉलर** के जापानी माल ताइवान स्ट्रेट से गुजरते हैं।
- किसी अवरोध/नाकेबंदी से जापान और वैश्विक सप्लाई चेन पर गंभीर प्रभाव पड़ेगा।

---

5. रक्षा तनाव और क्षेत्रीय सैन्यीकरण

5.1 ताइवान परिदृश्य

- चीन की संभावित नाकेबंदी या आक्रमण जापान की समुद्री लाइनों, व्यापार और ओकिनावा तक के क्षेत्रों को खतरे में डाल सकता है।
- अमेरिका–जापान सुरक्षा गठबंधन इस निरोध रणनीति का मुख्य आधार बनता है।

5.2 जापान का सैन्य निर्माण

- 2025 तक रक्षा खर्च 70 वर्षों में सबसे उच्च स्तर पर पहुँच गया।

- अमेरिका और फिलीपींस के साथ सैन्य अभ्यास बढ़े।
- मिसाइल क्षमता और द्वीप रक्षा प्रणालियों को अपग्रेड किया गया।

5.3 चीन का सैन्य दबाव

- PLA लगातार ताइवान और जापान के निकट समुद्री वायु क्षेत्रों में गतिविधियाँ बढ़ा रहा है।
- जापान ने 2024 में चीनी विमानों के खिलाफ रिकॉर्ड स्क्रैम्बल दर्ज किए।

---

6. डेटा मुख्य बिंदु (चार्ट से)

- **GDP वृद्धि**: 2024 में जापान की विकास दर **0.69%** पर सिमट गई।
- **आयात–निर्यात**: जापान के प्रमुख व्यापार साझेदार — चीन और अमेरिका।
- **ताइवान का महत्व**:
  - इंटीग्रेटेड सर्किट → जापान के ताइवान आयात का 60%
  - सेमीकंडक्टर्स → 18%
- **ताइवान स्ट्रेट व्यापार (2022)**: जापान शीर्ष पर, **$357.41 बिलियन**।
- **स्क्रैम्बल घटनाएँ**: 2024 में चीनी विमानों के खिलाफ सर्वाधिक।
- **सैन्य खर्च (% GDP)**: 2020 के बाद तेज़ वृद्धि।

---

7. जापान का घरेलू संदर्भ

जापान इन संरचनात्मक चुनौतियों से जूझ रहा है:

- धीमी आर्थिक वृद्धि
- तेज़ी से वृद्ध होती जनसंख्या
- श्रमिकों की कमी और महँगाई
- प्रधानमंत्री किशिदा सरकार में गिरता जन-विश्वास

ये आंतरिक कमजोरियाँ बाहरी सुरक्षा मुद्दों — विशेषकर ताइवान — की राजनीतिक संवेदनशीलता को बढ़ाती हैं।

---

8. चीन की स्थिति

- ताकाइची के बयान पर कड़ी आपत्ति।
- शी जिनपिंग लगातार कहते हैं कि ताइवान का पुनर्एकीकरण *"अनिवार्य"* है।
- चीन ने जापान पर "वन चाइना नीति" को कमजोर करने और अमेरिकी रोकथाम रणनीति के साथ अत्यधिक संरेखण का आरोप लगाया।

---

9. निष्कर्ष

जापान–चीन संबंध अब *असहज आर्थिक निर्भरता* से *खुले रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता* की ओर बढ़ रहे हैं। ताइवान इस टकराव का मुख्य केंद्र बन गया है जहाँ रक्षा चिंताएँ, आर्थिक जोखिम और संवैधानिक बहसें एक-दूसरे से जुड़ती हैं। जैसे-जैसे व्यापार और सैन्य तनाव बढ़ रहे हैं, पूर्वी एशिया एक नाजुक सुरक्षा संतुलन की ओर बढ़ रहा है — जिसका वैश्विक सप्लाई चेन, सेमीकंडक्टर सुरक्षा और महाशक्ति राजनीति पर व्यापक प्रभाव पड़ेगा

HOW TO USE IT

जापान–चीन टकराव ताइवान पर मूलतः पूर्वी एशिया में अमेरिका–चीन महाशक्ति प्रतिद्वंद्विता का स्थानीयकरण है। यह आधुनिक भू-राजनीति का केंद्रीय विरोधाभास दिखाता है—गहरी आर्थिक परस्पर निर्भरता और तीव्र सामरिक–सैन्य प्रतिस्पर्धा का सह-अस्तित्व। भारत के लिए इसका सीधा प्रभाव उसके रणनीतिक गणित, आर्थिक सुरक्षा और व्यापक पड़ोस (Indo-Pacific) की स्थिरता पर पड़ता है।

मुख्य प्रासंगिकता: GS Paper–II (International Relations)

1. India and its neighborhood – relations

कैसे उपयोग करें:

यह दिखाने के लिए कि किसी दूरस्थ क्षेत्र (East Asia) का संघर्ष भी भारत के विस्तारित पड़ोस और रणनीतिक हितों को सीधे प्रभावित करता है।

मुख्य बिंदु:

इंडो-पैसिफिक कनेक्टिविटी:

ताइवान स्ट्रेट और दक्षिण चीन सागर की स्थिरता व्यापक इंडो-पैसिफिक की सुरक्षा से जुड़ी है—जहाँ भारत की समुद्री सुरक्षा, व्यापार, ऊर्जा मार्ग और नौवहन स्वतंत्रता दांव पर होती है।

क्वाड पर प्रभाव:

जापान क्वाड का प्रमुख सदस्य है (भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया के साथ)।

जापान पर किसी भी सैन्य संकट का सीधा प्रभाव *क्वाड* की एकता और सामरिक प्राथमिकताओं पर पड़ेगा, जो भारत की इंडो-पैसिफिक रणनीति के लिए महत्वपूर्ण है।

---

2. Bilateral, regional and global groupings and agreements involving India and/or affecting India's interests

कैसे उपयोग करें:

मुख्य साझेदारियों और गठबंधनों की भूमिका का विश्लेषण करें।

मुख्य बिंदु:

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

अमेरिका–जापान सुरक्षा गठबंधन:

लेख में कहा गया है कि ताइवान संकट की स्थिति में "*U.S.–Japan सुरक्षा गठबंधन केंद्रीय हो जाएगा*".

यह दिखाता है कि एशिया की सुरक्षा संरचना मजबूत द्विपक्षीय गठबंधनों पर टिकी है—जो भारत की Indo-Pacific रणनीति के संदर्भ में महत्वपूर्ण उदाहरण है।

चीन का उभार और आक्रामकता:

जापान के बयान पर चीन की प्रतिक्रिया और सैन्य दबाव, *status quo को चुनौती* देने की उसकी व्यापक रणनीति का हिस्सा है।

यह नियम-आधारित व्यवस्था को प्रभावित करता है जिसका भारत समर्थन करता है।

---

3. Effect of policies and politics of developed and developing countries on India's interests

कैसे उपयोग करें:

जापान और चीन की आर्थिक–सुरक्षा नीतियों को भारत के राष्ट्रीय हितों से जोड़ें।

मुख्य बिंदु:

आर्थिक जोखिम:

जापान की चीन पर निर्भरता (rare earths, सप्लाई चेन, Taiwan Strait मार्ग) वही वैश्विक जोखिम दिखाती है जिससे भारत भी प्रभावित होगा।

संघर्ष होने पर वैश्विक सप्लाई चेन बाधित होंगी, जिससे भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी और निर्यात प्रभावित होंगे।

सेमीकंडक्टर सुरक्षा:

ताइवान से जापान के 60% आयात integrated circuits हैं।

यदि ताइवान संकट होता है तो सेमीकंडक्टर की वैश्विक कमी हो जाएगी—भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था, इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादन और PLI योजनाओं पर भारी प्रभाव पड़ेगा।

मुख्य प्रासंगिकता: GS Paper–III (Security, Economy)

1. Security challenges and their management in border areas

कैसे उपयोग करें:

भारत के LAC प्रबंधन के संदर्भ में समानताएँ और सीखें निकालें।

मुख्य बिंदु:

एस्केलेशन प्रबंधन:

जैसे ताकाइची के बयान ने अचानक सैन्य तनाव बढ़ा दिया, यह दिखाता है कि राजनीतिक वक्तव्य भी संघर्ष को भड़का सकते हैं।

भारत के लिए यह LAC पर बयानबाजी और कदमों के सावधानीपूर्ण प्रबंधन की सीख है।

सैन्य आधुनिकीकरण:

जापान ने 70 वर्षों में सबसे अधिक रक्षा खर्च किया और मिसाइल प्रणालियों को अपग्रेड किया।

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

यह दिखाता है कि देश चीन के उभार से निपटने के लिए किस तरह सैन्य क्षमताएँ बढ़ा रहे हैं— जो भारत के लिए भी रणनीतिक संदर्भ प्रदान करता है।

---

2. Indian Economy and issues relating to planning, mobilization of resources, growth, development and employment

कैसे उपयोग करें:

संघर्ष के आर्थिक आयामों को भारत की नीतियों से जोड़ें।

मुख्य बिंदु:

सप्लाई चेन रेज़िलिएंस:

यह स्थिति भारत के लिए आत्मनिर्भरता, Diversification और PLI योजनाओं के महत्व को रेखांकित करती है।

एक संकट दिखाता है कि किसी एक क्षेत्र या देश पर अत्यधिक निर्भरता खतरनाक है।

व्यापार मार्गों में व्यवधान:

ताइवान स्ट्रेट की नाकेबंदी वैश्विक समुद्री व्यापार को बाधित करेगी।

यह समुद्री मार्गों की लागत, बीमा और पारगमन समय को प्रभावित कर भारत के व्यापार संतुलन और विकास पर नकारात्मक असर डालेगी।

COP30: "आग से लड़ाई — क्रियान्वयन ही नई कथा"

---

1. संदर्भ व महत्व

स्थान: बेलेम, ब्राज़ील — अमेज़न वर्षावन के निकटता के कारण प्रतीकात्मक महत्व।

प्रतीकात्मकता: पेरिस समझौते (2015) के 10 वर्ष बाद आयोजित, जिसे 195 देशों ने हस्ताक्षरित किया था।

पेरिस समझौते का लक्ष्य:

- वैश्विक तापमान वृद्धि को 2°C से नीचे रखना
- आदर्श रूप से 1.5°C तक सीमित करना

जलवायु यथार्थ:

2024 पहला वर्ष था जब वैश्विक तापमान 1.5°C सीमा को पार कर गया — संकट की गंभीरता का संकेत।

---

2. पेरिस समझौते के बाद की मुख्य चुनौती

देश अब भी इन मुद्दों से जूझ रहे हैं—

- अर्थव्यवस्थाओं को जीवाश्म ईंधन से दूर ले जाना
- संक्रमण (transition) के लिए जिम्मेदारी, वित्त व तकनीक साझा करना
- जलवायु परिवर्तन से हुए **हानि एवं क्षति (loss & damage)** का समाधान
- जलवायु कार्रवाई और आर्थिक विकास/प्रतिस्पर्धा का संतुलन बनाना

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

3. दो प्रमुख ब्लॉकों का उभरना

ब्लॉक 1: विकसित देश

• कठोर उत्सर्जन लक्ष्यों की मांग

• जीवाश्म ईंधन चरणबद्ध समाप्ति के स्पष्ट रोडमैप की अपेक्षा

ब्लॉक 2: विकासशील देश व पेट्रो-स्टेट्स

• बाहर से थोपे गए आदेशों को अस्वीकार

• अधिक जलवायु वित्त, तकनीक हस्तांतरण और पिछली प्रतिबद्धताओं को पूरा करने की मांग

---

4. COP30 का बड़ा बदलाव: "क्रियान्वयन" पर फोकस

नैरेटिव परिवर्तन

• बातचीत/वादों से आगे बढ़कर कार्रवाई पर जोर

• बहुपक्षवाद (multilateralism) की अनिवार्यता पर बल

मुख्य क्रियान्वयन विषय:

अनुकूलन (Adaptation):
जलवायु परिवर्तन के रोज़मर्रा के प्रभावों की स्वीकृति।

जस्ट ट्रांज़िशन (Just Transition):
व्यावहारिक तैयारी पर ध्यान—

• जलवायु-लचीला विकास (resilient development)

• कार्यबल का पुनः कौशल विकास

• नई वित्तीय प्रतिज्ञाएँ

भू-राजनीतिक पहलू:
अमेरिका की अनुपस्थिति ने विकसित देशों की सामूहिक शक्ति को कमजोर किया।

---

5. COP30 में भारत की भूमिका

• विकासशील देशों के हितों की मजबूत पैरवी की।

• ब्राज़ील द्वारा ग्लोबल साउथ की चिंताओं को शामिल करने के प्रयासों का स्वागत।

• **अपडेटेड NDCs की घोषणा न करना**—ध्यान आकर्षित करने वाला कूटनीतिक संकेत।

---

6. समग्र मूल्यांकन व आगे की राह

COP प्रक्रिया धीमी लगती है, क्योंकि—

• प्रदूषण बढ़ रहा है

• वनों की कटाई जारी है

• जलवायु संदेहवाद (climate denialism) बढ़ रहा है

फिर भी—

COP ही एकमात्र सक्रिय वैश्विक मंच है जो दुनिया को विनाशकारी जलवायु परिणामों से बचा सकता है।

HOW TO USE IT

COP30 वैश्विक जलवायु संघर्ष के एक निर्णायक मोड़ को दर्शाता है—जहाँ दुनिया अब

MENTORA IAS
YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT

केवल वादों से आगे बढ़कर वास्तविक क्रियान्वयन की ओर बढ़ने के लिए बाध्य है। 1.5°C की सीमा के पार हो जाने से संकट की तात्कालिकता स्पष्ट हो गई है। यह उत्तर–दक्षिण विभाजन, जलवायु न्याय और न्यायपूर्ण संक्रमण की चुनौतियों को उजागर करता है, जबकि यह स्वीकार करता है कि COP प्रक्रिया धीमी और अपूर्ण होते हुए भी वैश्विक जलवायु सहयोग का सबसे महत्वपूर्ण एवं सक्रिय मंच बनी हुई है।

मुख्य प्रासंगिकता: GS Paper–III (Environment, Economy, Security)

1. Conservation, Environmental Pollution and Degradation, Environmental Impact Assessment

कैसे उपयोग करें:

यह पर्यावरणीय क्षरण के खिलाफ वैश्विक संस्थागत प्रतिक्रिया का सबसे नवीन (latest) अपडेट है।

मुख्य बिंदु:

1.5°C सीमा का पार होना:

2024 वह पहला वर्ष था जब वैश्विक तापमान 1.5°C सीमा को पार कर गया।

यह जलवायु संकट को रोकने से आगे बढ़कर—**managed retreat, adaptation और loss & damage**—पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता दर्शाता है।

क्रियान्वयन का अंतर (Implementation Gap):

पेरिस समझौते में किए गए वादों और वास्तविक कार्रवाई के बीच व्यापक अंतर सबसे बड़ी चुनौती है।

COP30 का प्रमुख संदेश है कि *अब वादा नहीं, अमल ज़रूरी है*।

---

2. Indian Economy and issues relating to Planning, Mobilization of Resources, Growth, Development and Employment

कैसे उपयोग करें:

जलवायु बहस के आर्थिक आयामों को भारत की विकास आवश्यकताओं से जोड़ें।

मुख्य बिंदु:

जस्ट ट्रांज़िशन (Just Transition):

यह केवल पर्यावरणीय मुद्दा नहीं, बल्कि एक बड़ा आर्थिक-सामाजिक परिवर्तन है—

- कार्यबल को नए कौशल देना
- ऊर्जा प्रणालियों का रूपांतरण
- असमानता न बढ़ने देना

भारत के लिए यह चुनौतीपूर्ण है क्योंकि विकास और रोजगार दोनों दांव पर हैं।

जलवायु वित्त (Climate Finance):

विकासशील देशों की अधिक जलवायु वित्त और तकनीक हस्तांतरण की मांग उनकी *विकास के अधिकार* से जुड़ी है।

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

पर्याप्त वित्तीय सहयोग के बिना जलवायु लक्ष्य उनके विकास को बाधित कर सकते हैं।

मुख्य प्रासंगिकता: GS Paper–II (Governance, International Relations)

1. Bilateral, Regional and Global Groupings and Agreements involving India and/or affecting India's interests

कैसे उपयोग करें:

COP को वैश्विक जलवायु कार्रवाई के प्रमुख बहुपक्षीय मंच के रूप में समझें और इसमें भारत की भूमिका का अध्ययन करें।

मुख्य बिंदु:

उत्तर–दक्षिण विभाजन:

COP30 में दो स्पष्ट ब्लॉक उभरे—

- विकसित देश
- विकासशील एवं पेट्रो-स्टेट्स

यह ऐतिहासिक जिम्मेदारी, समान लेकिन विभेदित दायित्व (CBDR), और समानता के मुद्दे पर चलने वाले संघर्ष को दर्शाता है।

भारत की कूटनीतिक स्थिति:

भारत ने विकासशील देशों की आवाज़ को मजबूती से उठाया।

अपने NDC को अपडेट न करने का फैसला एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक संकेत है—

कि विकसित देश पहले अपने वित्त एवं तकनीकी वादों को पूरा करें।

---

2. Important Aspects of Governance

कैसे उपयोग करें:

COP प्रक्रिया को वैश्विक शासन (global governance) की चुनौतियों के उदाहरण के रूप में समझें।

मुख्य बिंदु:

बहुपक्षवाद पर दबाव (Multilateralism Under Stress):

हालाँकि COP की गति धीमी है और परिणाम सीमित हैं,

लेकिन यह "एकमात्र सक्रिय वैश्विक मंच" बना हुआ है—यह वैश्विक शासन की अनिवार्यता को दर्शाता है।

जलवायु की भू-राजनीति:

अमेरिका की अनुपस्थिति ने विकसित देशों की सामूहिक ताकत को कमजोर किया।

यह दिखाता है कि जलवायु एजेंडा केवल पर्यावरण का मुद्दा नहीं, बल्कि **भू-राजनीति और घरेलू राजनीति** से भी गहराई से जुड़ा है।

GS Paper–IV (Ethics) से संबद्धता

पर्यावरण नैतिकता और जलवायु न्याय (Climate Justice):

विकसित देशों द्वारा कठोर लक्ष्य थोपने की मांग—

बिना पर्याप्त वित्त उपलब्ध कराए—न्याय के प्रश्न खड़े करती है:

- ऐतिहासिक जिम्मेदारी

- समानता
- अंतर-पीढ़ीय न्याय (intergenerational equity)

वहीं विकासशील देशों का रुख **जलवायु न्याय** की लड़ाई है।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"